आपातकाल में सृजन फुलवारी

नमिता दुबे

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

नमिता दूबे

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-199-2
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, नमिता दूबे
मूल्य - 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY NAMITA DUBEY

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	दीप	6
2.	अनवरत यात्रा	7
3.	कृतघ्न मानव	8
4.	हमसफर	9
5.	फागुन के रंग	10
6.	आवाज	11
7.	बदलाव	12
8.	कानीन	13
9.	पतझड़	14
10.	निर्णय	15
11.	हिस्सा	16
12.	अधूरी	17
13.	तुम्हारे जीवन के हर पृष्ठ पर	18
14.	प्रकृति	19

दीप

लाखो दीप बाहर जलाये
अन्तर मन में अंधकार था,
छा जाये उजियाला
इक दीप जो अन्दर जलाऊं!

मन की देहरी सजाऊं
संताप सारे मिटाऊं,
दीपकों की रौशनी से
प्रकृति को नहलाऊं।

दिवाली सी जगमग रात में
प्रकाश पर्व से आलोकित,
मानस हंस की व्याकुलता
स्नेह सुधा से भरमाऊं!

नौ मिनिट का आवाहन
नौ सदियों याद रखे,
जगमगाती रात में
शक्ति का आवाहन करूं!

अनवरत यात्रा

जानें कितनी सदियां बीतीं
मुसाफिर तनिक ना सुस्ताया,
जन्मों के फेर में पडकर
घर से दूर चला आया।

माया मोह नें ऐसा भरमाया
भूल गया विगत सब पाया,
हर जन्म नयीं शुरूआत और अन्त
मति मारी, कुछ समझ ना आया।

अनन्त यात्रा का राही
विसरा सारी सच्चाई,
उलझ गया काया माया में
अब भ्रमित निकल ना पाया।

राहों की दुश्वारियां देख
जानें क्यों वो घबरायें,
जाना भी एकाकी होगा
जब पथिक अकेला ही आया।

सत्य की चुभन तडपाये
स्वीकार ना वो कर पाये
इससे पहले भी हम ही थे
बस जुदाथे रूप और काया।

पर नहीं सीखा सबक जब हमनें
बार-बार यहीं पर आये!
जानें क्या है जो आते हम ?
क्या करनें? कौन सी माया?

कौन सी शिक्षा? कौन सा गुरू?
परिस्थियां ही शिक्षक बन जातीं,
बड़ा महंगा सबक सिखाती
पर मानव कभी सीख ना पाया!

जब जाते हम खाली हाथ
कर्मों की पोटली ले कर साथ,
नये जन्म का बीज बो,
नया जीवन हमने पाया।

एक नवीन राह पकडते,
हर जन्म की तरह उलझते
फिर यात्री बन यात्रा करते
कहाँ कभी कुछ हमने पाया!

कृतघ्न मानव

खुद को सर्वस्व समझ
मद में झूलता रहा,
जीव भक्षण कर
नैतिकता भूलता रहा!

आज कैद में है तू
है सभी जीव आजाद,
करनी तेरी अटल जुबानी
अत्याचारी बनता रहा!

प्रकृति को इतना सताया
त्राहि त्राहि सर्वस्य मचा,
भूख अपनी मिटाने को
चरित्रहीन बनता रहा।

मर रही है मानव जाति
संक्रमण ऐसा फैला।
खौफ में है सृष्टि सारी,
मनमानी तू करता रहा।

हतप्रभ है प्रकृति
चिड़ियों की सुन चहचहाहट
हवा निर्मल हो गई,
तारों से सज गया आकाश
बस तू जहर घोलता रहा!

हमसफर

आहट तेरे पांव की
दिल पे दस्तक देती है,
झूम-झूम जीवन की मौज
मन में ये कहती है,
आ रहा तेरा साथी, बन कर हमसफर!

पायल-बिछिया, कंगना पहन
मांग सजा, लाल सिन्दूर!
बस एक भरोसा रख, रहेगा अब ये जीवन भर।

फूल तेरे पांवों में,
मैं बिछा ना सकूंगा।
ये जीवन है कठिन मेरा, बस साथ तू चल।

मान, सम्मान, अस्मिता का
मैं ध्यान करूंगा।
तुम देना साथ मेरा, मैं साथ तेरे रहूँगा।

एक है अब हम
एक हमारे सुख दुःख,
मिल कर जियेगे, पा जायेंगे मंजिल हम।

बस यूँ ही खनकाती रहना
तुम पायल-कंगना,
श्रृंगार तुम्हारा सजा रहे, दूंगा मैं वो अंगना।

फागुन के रंग

बिखरे है ब्रज में
रंग अबीर-गुलाल,
है मौज में सब
बस तुम नहीं दिखते हो कान्हा!

है फागुन का महीना
मन को बडा लुभाता है,
याद तुम्हें कर दिल अकुलाता है।

बसे है रग-रग में
रास-रंग के शेष,
हर ओर छिटका है रंग पर तुम नहीं हो कान्हा।

कण-कण में बसते हो,
फागुन के रंग में हो रंगीले।
मन को सराबोर करते हो, मन रसिया ओ कान्हा।

ना देखी हमने वृन्दावन की होली
पर सुन कर ही मन ही मन जी ली,
करो शामिल, हे कान्हा, अपने में विलीन हमें।

अपने अस्तित्व की हो बलि
तुम में मिल,
बस तुम हो जाऊं यही विनती है खरी।

आवाज

अधूरी-सी इक ख्वाहिश
अचानक जाग उठी!
आवाज दे जगाने लगी,
जाने कहां छुपी थी?
सतह पर तो वक्त की गर्द जमी थी,
मन की उथल-पुथल
उसे सतह पे ले आई।
अब वो मुझे,
नये उगे डैने दिखा रही है
दिल की गहराई से निकल कर
आवाज लगा रही है!
मैंने तो सोचा था,
आज में कल दफन हो गया
पर नहीं!
कल आगे आ पुकार रहा है।
मेरे वजूद को ललकार रहा है!
यूँ मट्टी बन भी कोई जीना है?
साबित करो तुम जीवित हो,
एक सांस सिर्फ अपने लिए लो।
जग गया है सोया ख्वाब, उसे पूरा करो।

बदलाव

हे बदलाव के अंध-भक्त
क्या तुम खुश हो?
परिवर्तन के इस दौर से,
हमारी सनातन संस्कृति
परम्पराओ का बनता मजाक,
चाटुकारिता अपराध और नशे के चंगुल में फंसते युवा,
कोल्हू के बैल सा पिसता मध्यम वर्ग,
नफरत, क्षेत्रीयता और
खतरनाक धार्मिक कट्टरता का कसता शिकंजा!
हो सकता है तुम खुश हो।
मैं परिवर्तन की विरोधी नहीं हूं,
बदलाव अवश्यम्भि है
पर किस आधार पर?
खुद को बर्बाद कर,
अपने से छल कर!
जबाब तुम खुद को दो।
परिवर्तन मुझे भी भाता है
पर खुद के अस्तित्व की कीमत पर नहीं।

कानीन

आँख खुली,खुद को तन्हा पाया
अनाथ कानीन मैं कहलाया!
बता जमाने मेरा दोष था क्या?
किस गुनाह की सजा मैं पाया?
मैं था वो ओस की बूंद,
गलत राह से जग में आया।
धूल-मिट्टी, सडक-फुटपाथ
बचपन यही पर था बिताया।
गन्दगी, जूठन ने पाला पोसा
जमाने को ये भी रास ना आया!
दुत्कारा सदा ही इस समाज ने,
गाली दी पहचान पूछी,
सजा दी गुनाहगार बताया!
एक नर-नारी के पाप का
जाने क्यूं प्रारब्ध ने
हिस्सा मुझे था बनाया!
ना कुल, ना गोत्र
ना माता, ना पिता
अभिशप्त बना जीवन
जमाने को ये भी ना भाया।
अजब चलन जमाने का
मुझे अब समझ है आया,
समाज में केवल नाम ही पहचान बना पाया!

पतझड़

मौसम ही तो है
बदल गया!
परिवर्तन उसकी नियति है
कोई मन तो है नहीं
ठहरा रहे
बदलाव शाश्वत है
स्वीकार लो
या विसूरते रहो!
एक तुम्हें तोड़ेगा
दूसरा समय की धारा संग
बहायेगा,
ठिठकना क्यों?
चलो ना,
आज पतझड़ है
कल बहार भी आयेगी
फूल खिले हैं, सूखेगे-झडेगे
नये खिलेगे
बस स्वीकार करो
आसान होगा सब-कुछ,
जैसे जीवन में
समझौते करने पडते हैं
मनचाहे-अनचाहे!

निर्णय

यूं दर ना खडखडाओ
मैंनें द्वार खुला छोडा है
आ जाओ......
पायदान पर सारा अहम-वहम
छोड के
मैं सिर्फ तुम्हें देखना चाहती हूं,
तुमसे बात करना चाहती हूं,
नहीं चाहिये मुझे
हम-दोनों के बीच कोई दौलत का रखवाला,
खुद को भगवान मानने वाला,
भ्रम में जीने वाला!
मेरे दोस्त, मेरे प्रिय,
तुम केवल 'तुम' बन मिलो मुझसे एक बार.....
कह दूं तुमसे सब मन की बात
फिर पहन लेना तुम वही चोला
मुझसे दूर जा कर,
या बन केमानव
मेरे हो जाना!
निर्णय तुम्हारा,
सोच समझ कर फैसला करना.....

हिस्सा

भुला दिया वक्त ने जिसे
वो अधूरा किस्सा हूं,
तुम ना समझो फिर भी
तुम्हारी यादों का हिस्सा हूं,

माना बहुत आगे बढ गये तुम
जिंदगी की राहों में,
पलको पर पडा़ आंसू ना बहा
बस उसी का हिस्सा हूं,

जिस पल याद कर रोये थे तुम
आगे बढ काजल को
बहने से रोका था जिसने,
बस उसी का किस्सा हूं

किसी को क्या बताऊं
क्यों मैं जवाब बनूं
बेनामी सवालों का,
ढूंढती है तेरी निगाहें
बस उसी पल का हिस्सा हूं

काँटे चुभे जब भी तुम्हें
मैं दर्द से कराह गया
दिल की तडप देख तुम्हारी
मैं जी कर भी, जी ना सका
उसी याद का किस्सा हूँ

किससे पूंछू खैरियत तुम्हारी
तुम्हारा ही तो हिस्सा हूं
जिसे तुम भुला ना पाये
वहीं कसमसाता किस्सा हूं

बुलबुला समय का

बडी देर से तेज हवाएं
मुझे पत्ते सा उडाती है,
पर तेरी यादों के बोझ तले
वो दब के रह जाती है

जब भी सोचा आगे बढ जाऊं
तुम ओस-सी बरस गई,
भींग तुम्हारी बारिश में
मेरी सांसें मचल गई

ना भूला, ना बीता हूं
बस खोखला रीता हूं
जिसे वक्त ने बजाया है
मैं वो टूटी वीणा हूँ

यूं ना देख बेबस नजरों से
मैं कांच सा बिखर जाऊंगा
समेटा ना गया गर लम्हों में
सदियों तक बिखेरा जाऊंगा

भूल जा! कहता हूं
मत सिसक, मैं रहता हूं
जो बह रहे आँखों से दर्द
मैं जज्ब कर, वो सहता हूं

तेरा हूँ सदियों से
कब जुदातुझसे हुआ,
मैं हूँ बुलबुला समय का
तुझमे ही तो रहता हूँ!

अधूरी

हाँ,
अधूरी हूँ मैं तुम्हारे बिना,
ऐसा नहीं है कि
मैं बाहरी काम
या दुनियादारी से डरती हूँ,
जिम्मेदारी का बोझ भी
मुझे थकाता नहीं है,
रास्ते का एकांत भी
परेशान नहीं करता,
वक्त से रेस पसंद है मुझे,
मुझे अखरता है
तुम्हारा नकारात्मक होना,
ये कहना,'तुमसे नहीं होगा!'
अन्दर तक आहत हो जाती हूँ मैं
तुम्हारे व्यवहार से,
बस चंद बूँदें खारे जल की
आँख से निकल
मन के समंदर में मिल जाती है,
सारा तनाव कपूर सा उडा जाता है
जब तुम सॉरी कह,गले से लगा लेते हो,
बस थोड़ा समझने की कोशिश करो ना!
अलग नहीं हूं मैं तुमसे,
पूर्ण हूँ तुम्हारे साथ
अधूरी हूँ तुम्हारे बिना।

तुम्हारे जीवन के हर पृष्ठ पर

जीवन की किताब अभी अधूरी है,
कुछ पन्ने लिखने बाकी है।
वक्त की दरारों से झांकते, कुछ पल
अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं
उन्हें शब्दों में आंका और परखा नहीं गया,
वे लहू-लुहान से
दिल के किसी कोने में दबे है,
आँख बंद करके जब-जब मन की सीढियां उतरी,
वे मुस्कुराते, आलिंगन कर दास्तान सुनाने लगे।
गढने लगे एक इतिहास
तुम्हारे जीवन के हर एक पृष्ठ पर
बिन्दुओं के रूप में
दर्ज हो गये सदियाँ बन कर।
अक्षर-अक्षर गढा है स्याही बन लहू से,
तुम पढो तो सही
मैं दर्ज हूँ इबारत बन अगले पृष्ठ की
आखरी लाईन का आखरी शब्द बन,
सुनो, किताब जब पूर्ण हो
मेरा आभार जरूर मानना,
चाहे सफर में मै तुम्हारे साथ होऊं या नहीं,
समय की सरहद
सबकी जीवन मापनी तय करती है,
और कहानी अगला एपिसोड हो जाती है,
ठीक है ना, चलूँ मैं?

प्रकृति

मेरे बच्चों,
सुना है
बहुत तरक्की कर ली है तुम लोगों ने,
पृथ्वी की सांस घोंट कर!

मेरे बारे मे जरा भी नहीं सोचा,
प्रकृति को लगभग नष्ट कर दिया,
ऊंची-ऊंची अट्टालिकाये
नदियों का प्रदूषित पानी,
कई प्रजातियों की समाप्ति
और स्वयं की विस्फोटक आबादी!

ये तुम्हारी वासना का परिणाम है ना,
लालच, व्यभिचार, शोषण, नैतिक चारित्रिक पतन,
कहां से चले थे तुम लोग
कहां आ गये तुम,
अंधेरे से उजाले की ओर जाने की बजाय,
तुम उजाले से अंधेरे की ओर मुड गये।

कभी सोचा है
अगर मैं कुपित हुई तो क्या होगा?
तुम्हारा भौतिक विकास
पल भर में माटी में मिल जायेगा,
स्वयं को भी ना बचा पाओगे,
इसे चेतावनी समझना, वरना अंत निश्चित है।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

नमिता दुबे

फ्लैट न. -१२०३ ए, टॉवर-जी.२
सेक्टर -७५, प्लेट न. ११
गोल्फ सिटी, नोएडा २०१३०५

Email- namitaavnishdubey@gmail.com
Mobile - 9640781347

सृजन समय का बंदी नहीं है। वो तो मन के आकाश में स्वच्छन्दता से उडता आजाद पक्षी है। विषय, काल, परिस्थिति के अनुसार शब्दों की धार दिशा तय करती है, कि उसे धारदार होना है या मन बहलाव का साधन बनना है।

आज परिस्थिति आपातकालीन है। महामारी का विनाशक दौर जारी है। बाहरी दुनिया में अदृश्य वायरस का खौफनाक कहर काल बन मानव को निगलता जा रहा है।

ऐसे वातावरण में, मन की तपती भट्टी से निकले सृजनात्मक उद्गार एक नयी तस्वीर बना रहे है। उसे नया जामा पहना रहा है अंतरा शब्दशक्ति का प्रयास, जो सराहनीय है। कम से कम कलम सही दिशा में वर्तमान उकेर रही है।और भविष्य की नींव रच रही है।

धन्यवाद अंतरा शब्द शक्ति।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क – 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-199-2

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/